विद्यार्थियोंकी मुश्किलें

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ | सम्पादक – प्यारेलाल | अंक २९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १७ अगस्त, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हफ़्तेवार डायरी

काश्मीरका सफ़र

हफ़्तोंकी आशा और निराशाके बाद काश्मीरके लोगोंने यह सुनकर चैनकी साँस ली कि गांधीजी आखिर ३० जुलाअीकी रातको काश्मीरके लिअे रवाना हो गये हैं। गांधीजीको अेकमात्र शौक अुनके कामका है। वे कुदरती दृश्योंको देखनेकी भी परवाह नहीं करते। और अिस वजहसे अुनके साथवालोंको अक्सर सुन्दर दृश्य देखनेका लालच छोड़ना पड़ता है। महादेव भाअीने अेक बार मुझसे कहा था कि गांधीजी जब दक्खिन हिन्दुस्तानका दौरा कर रहे थे, तब अुनके साथ रहते हुअे मुझे अितना भी वक़्त नहीं मिला कि मैं सुन्दर गरसप्पा जलप्रपात देखनेके लिअे जा सकूँ। अुस दौरेमें गांधीजीको बहुत काम रहा और यही हालत अुनके सेक्रेटरियोंकी थी।

मगर सुन्दर काश्मीर-भूमिको देखनेके लिअे तो गांधीजी भी अुत्सुक थे। अुनके काश्मीरके सफरके बारेमें हफ़्तोंसे चर्चा चल रही थी। काश्मीरके नक़शे लाकर पण्डित नेहरूने गांधीजीको बतलाये और कहा कि कौन कौनसी जगहें अुन्हें ज़रूर देखनी चाहियें। पण्डितजीने काश्मीरकी तारीफ़में लिखे हुअे हिस्से किताबोंसे पढ़कर गांधीजीको सुनाये और हर तरहसे अुनमें अुत्सुकता पैदा करनेकी कोशिश की। सेठ घनश्यामदास बिड़ला अेक पक्के सनातनी हिन्दू हैं। जैसे ही अुन्होंने सुना कि गांधीजी अुत्तरकाशीकी यात्रा करना चाहते हैं, अुन्होंने बड़े अुत्साहके साथ 'बूढ़े बाबा'की यात्राका अिन्तज़ाम करना शुरू कर दिया। मगर बादमें गांधीजीने कुछ समयके लिअे वहाँ जानेका अिरादा छोड़ दिया। अैसे मामलोंमें पण्डित नेहरूकी वृत्ति दूसरे ही क़िस्मकी रहती है। तीर्थस्थानोंकी यात्रा अुन्हें पसन्द नहीं आती। वे चाहते थे कि 'बूढ़े बाबा' काश्मीर जायँ, जहाँ अुन्हें कुछ आराम और शान्ति मिल सके और साथ ही वे वहाँकी पीड़ित जनताको तसल्ली दे सकें। गांधीजीको आरामकी बेहद ज़रूरत थी, अिसलिअे वे काश्मीरमें १५ दिन बितानेपर राज़ी हो गये। मगर वाअिसरायकी अिच्छाके ख़िलाफ़ गांधीजी वहाँ जाना पसन्द नहीं करते थे। वाअिसरायको अपना निर्णय करनेमें देर लगी। वह सिर्फ़ सलाह देना चाहते थे। नतीजा यह हुआ कि १५ दिनके बदले गांधीजी काश्मीरके लिअे सिर्फ़ तीन दिन दे सके।

काश्मीरमें

गांधीजी पहली अगस्तकी शामको काश्मीर पहुँचे और चौथी अगस्तको वहाँसे वापिस रवाना हो गये। जितने समयके लिअे वे वहाँ रहे अुतनेमें अुन्होंने सड़कके अलावा सिर्फ़ लाला किशोरीलालके घरका वह भीतरी हिस्सा देखा, जहाँ अुन्हें ठहराया गया था। श्रीनगरके सुन्दर बग़ीचे देखनेके लिये भी वे दो घण्टेका वक़्त न दे सके। अुनका अेक मिनट-भी खाली नहीं था। सब तरहके लोग अुनसे मिलनेके लिअे आये थे। अुन सभीने गांधीजीसे, शेख अब्दुल्ला साहब और दूसरे नेताओंको छुड़ाने और प्राअिम मिनिस्टरको हटानेके बारेमें कहा। गांधीजीने जवाब दिया कि मैं किसी सियासी मक़सद को लेकर यहाँ नहीं आया। शेख अब्दुल्ला साहबको जेलसे छोड़ने के बारेमें अधिकारियोंसे कहनेका मेरा कोअी अिरादा नहीं है। अेक सत्याग्रहीका जेलमें रहना ही अितनी बड़ी ताक़त है कि अुससे आपका मक़सद हासिल हो सकता है।

जम्मूमें विद्यार्थियों और कार्यकर्त्ताओंके डेपुटेशन गांधीजीसे मिले। अुन्होंने कहा – "१६ अगस्तको हिन्दुस्तान तो आज़ाद हो जायगा। मगर काश्मीरका क्या होगा?" गांधीजीने जवाब दिया – "यह बात काश्मीरकी जनतापर निर्भर है।" अिसपर अुन्होंने पूछा — "जब शेख साहब जेलके सींखचोंमें बन्द हैं, तब जनता क्या कर सकती है?" अैसा ही सवाल अुनसे श्रीनगरमें भी पूछा गया था। गांधीजीने कहा कि अेक आदमीके भरोसे रहना और अुसकी ग़ैरहाज़रीमें अपनेको बेआसरा महसूस करना ठीक नहीं है। आपको अपने पाँवों-पर खड़े होना सीखना चाहिये। नेताका काम सिर्फ़ अितना ही है कि वह आपको अपने पाँवोंपर खड़े होनेमें मदद कर दे। चम्मचसे खिला-खिलाकर बड़ा करनेकी बात हमेशा नहीं चल सकती।

वे सब जानना चाहते थे कि काश्मीर हिन्दुस्तानी संघमें शामिल होगा या नहीं। गांधीजीने कहा कि अिस सवालपर चर्चा करनेके लिअे मैं काश्मीर नहीं आया। अिसका फ़ैसला तो काश्मीरकी जनताकी मर्ज़ीसे ही होना चाहिये।

गांधीजीने अपने मनमें तय कर लिया था कि वे काश्मीरमें कोअी तक़रीर न करेंगे, जिससे जहाँ तक बने अुनका काश्मीर-प्रवास सब तरहकी राजनीतिसे खाली रह सके। पहले दिन तो अुन्होंने सामूहिक प्रार्थना भी नहीं की। मगर स्टेटके अधिकारियोंने लिखा कि जिस मकानमें गांधीजी ठहरे हुअे हैं, अुसके कम्पाअुण्डमें प्रार्थना करनेपर अुन्हें कोअी अेतराज़ नहीं होगा। अिसलिअे दूसरे दिनसे प्रार्थना होने लगी और हज़ारोंकी तादादमें लोगोंने अुसमें भाग लिया। आसपासके गाँवोंसे मर्द और औरतोंके समूह महात्माके दर्शनके लिअे आने लगे। हिन्दुस्तानकी आम जनताके दिलपर गांधीजीके क़ाबूको देखकर दोस्त और दुश्मन सबको अेकसा ही ताज्जुब होता है। गांधीजीकी महज़ हाज़रीसे ही जनताको अेक अजीब क़िस्मकी शान्ति मिलती जान पड़ती है। जो लोग अुनके साथ लम्बे अरसे तक रहे हैं, वे रोज रोजकी झंझटोंमें अुलझकर गांधीजीकी अिस शक्तिको प्रत्यक्ष देख नहीं पाते।

वाह कैम्पमें

गांधीजी रावलपिण्डी होकर श्रीनगर गये थे। मगर अुनका प्रोग्राम पहलेसे तय था। अिसलिअे वे रावलपिण्डी नहीं ठहरे और सीधे श्रीनगर चले गये। मगर अुनका मन पंजाबके दंगा-पीड़ितोंमें ही लगा था। अिसलिअे अुन्होंने काश्मीरमें ठहरनेका अपना समय कम कर दिया और ४ अगस्तको जम्मू लौट आये। वहाँसे वे वाह कैम्पके निराश्रितोंके साथ कुछ वक़्त बितानेके लिअे मोटरमें बैठकर पिण्डी गये। अेक वक़्त अिस कैम्पमें निराश्रितोंकी तादाद २४ हज़ार तक पहुँच गअी थी। मगर आनेवाली १५ अगस्तके डरसे वे लोग बड़ी तेज़ीसे पश्चिमी पंजाब खाली कर रहे थे। जब गांधीजी वाह कैम्पमें पहुँचे, तब वहाँ निराश्रितोंकी तादाद नौ हजार थी। वे सब अिस बातका आग्रह कर

www.vinoba.in

रहे थे कि १५ अगस्तसे पहले यह कैम्प पूरबी पंजाबमें हटा दिया जाय। वे सब बुरी तरह डरे हुअे थे। जिन घटनाओंमेंसे वे गुज़र चुके थे, वे अितनी भयंकर थीं कि फिरसे अुनका सामना करनेकी अुनमें हिम्मत नहीं रह गअी थी। मुसलमानोंपर अुन्हें भरोसा नहीं था। अुन्होंने कहा कि अगर हमें पश्चिमी पंजाबमें पड़ा रहने दिया गया, तो हमारे लिअे मुसलमान बन जानेके सिवा कोअी दूसरा रास्ता नहीं रह जायगा। गांधीजीने कहा कि जिनके गुरुओंने अपने मज़हबके लिअे अैसी ज़बरदस्त कुरबानियाँ की हैं, अुन सिक्खोंके मुँहसे अैसी बातें सुनकर मुझे बड़ा दुःख होता है। क्या मज़हब या धर्म अितनी सस्ती चीज़ है कि अुसे अपनी ज़िन्दगी या जायदादकी हिफ़ाज़तके लिअे बेचा जा सके? गुरु गोविन्दसिंहके बच्चोंने अपनी छोटी अुमरमें अपने मज़हबके लिअे जान दे दी थी। अिस महान नज़ीरको आप क्यों भूल जाते हैं? सिक्खोंने अैश-आरामकी ज़िन्दगी बिताना शुरू कर दी है, जिससे अुनकी सारी बहादुरी और निर्भयता खत्म हो गअी है। क्या अिससे ज़्यादा दुःखकी बात भी कोअी हो सकती है?

मैं सोचता हूँ कि आनेवाली १५ अगस्तके बारेमें डरनेकी कोअी वजह नहीं है। मैं तो पसन्द करता हूँ कि अुस दिन तक आपके साथ रहूँ और अैसे किसी खतरेकी बात हो, तो अुसका सामना करूँ। मगर मैं अैसा कर नहीं सकता। १५ अगस्तसे पहले नोआखालीमें रहनेका मैंने वचन दे दिया है। अिसलिअे १५ तारीख तक आपके साथ रहनेके लिअे मैंने सुशीला नय्यरसे कह दिया है।

निराश्रितोंकी छावनीमें गांधीजी प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरमें अपने काश्मीर-प्रवास और निराश्रितोंके सवालपर बोले। रावलपिण्डी छोड़नेके बाद अुनकी यह पहली तक़रीर थी। गांधीजीकी यह तक़रीर अगले अंकमें दी जायगी।

पंजा साहिब

वाह छावनी सिक्खोंके मशहूर गुरुद्वारा पंजा साहिबसे क़रीब दो मील दूर है। गांधीजी छावनीसे पंजा साहिब तक मोटरमें गये, जहाँ अुन्हें आरामके लिअे जमीनके अन्दर बने अेक ठण्डे कमरेमें ले जाया गया। खास तालाबसे निकलने वाली पानीकी दो नहरें अिस कमरेसे होकर गुजरती हैं। मनको प्रसन्न करनेवाले ठण्डे पानीके अेक झरनेसे अिस तालाबमें पानी आता है। लेकिन ज़्यादातर तीर्थ-स्थानोंकी तरह अिस तालाबको भी बेपरवाह लोगोंने बहुत ज़्यादा गन्दा कर दिया है। पंजा साहिबसे रवाना होनेके पहले गांधीजी गुरुद्वारेमें गये, जहाँ अुन्हें गुरुमुखीमें लिखा अेक अभिनन्दन-पत्र दिया गया। अुसमें सिक्ख जातिके दुःख-दर्दका और पाकिस्तानमें सिक्खों और अुनके गुरुद्वारोंके सामने खड़े खतरेका बयान था। पंजा साहिब का गुरुद्वारा सिक्खोंके सबसे पुराने और सबसे पवित्र तीर्थोंमें से अेक है। अुसकी जायदाद लगभग अेक करोड़की है। वह रोज अेक हजार लोगोंको खाना देता है। आजकल 'गुरुका लंगर' में तीन या चार हजार आदमियोंको रोज खाना खिलाया जाता है। हालके दंगोंमें दो बार अिस गुरुद्वारेपर मुसलमानोंने हमला किया था। लेकिन भगवानकी दयासे हमला करनेवालोंको खदेड़ दिया गया और गुरुद्वारेको कोअी नुक़सान न पहुँचा। लेकिन वे गुरुद्वारेकी रक्षाका भरोसा दिलानेके लिअे निश्चित और ठोस साधन चाहते हैं। अुन्होंने कहा कि गुरुद्वारेको कोअी भी नुक़सान पहुँचा, तो सारे पंजाबकी शान्ति खतरेमें पड़ जायगी। वे यह भी चाहते हैं कि पूरबी पंजाबको सिक्ख राज बना दिया जाय, जहाँ सिक्ख धर्म और सभ्यता अुन्नति कर सके। अभिनन्दन-पत्रके जवाबमें गांधीजीने कहा, मैं अिसे मुमकिन नहीं मानता कि पूरबी पंजाबका शासन पूरी तरह सिक्खोंके हाथमें दे दिया जाय। मुझे लगता है कि सिक्खोंको अैसी गैर-मुनासिब हवस कभी नहीं करनी चाहिये। सिक्ख अेक लड़ाकू जातिके नाते दुनियामें मशहूर हैं, और यह ठीक भी है। अुनके लिअे तो दुनियामें किसी ओहदेको पानेके लिअे सिर्फ़ योग्यता या काबलीयत ही अेकमात्र कसौटी होनी चाहिये। मुझे आशा है कि हिन्दुस्तानके दोनों राज्योंमें सब जगह सिर्फ़ गुणोंकी परख करके ही लोगोंको नौकरियाँ और ओहदे दिये जायँगे। सिक्खोंको अिस सही होड़में सबसे आगे रहना चाहिये।

पाकिस्तानके पंजा साहब, ननकाना साहब और दूसरी जगहके दूसरे गुरुद्वारोंकी रक्षाके सवालपर गांधीजीने कहा—"आप लोग अिन तीर्थोंकी रक्षाके लिअे अपने भीतरकी ताकतके सिवा दूसरी किसी ताक़तकी तरफ मत ताकिये। मैं चाहता हूँ कि हर सिक्ख अपने धर्मका रक्षक बने। वह सिर्फ़ पंजा साहबकी—जो बड़े-से-बड़े तीर्थस्थानोंमें से अेक है—ही रक्षा न करे, बल्कि सारे गुरुद्वारोंका रक्षक बने। साथ ही मैं यह भी चाहता हूँ कि आप भविष्यके बारेमें कोअी डर न रखें। मैं तो यही कहूँगा कि आप मुसलमान नेताओंके दिये हुअे वचनपर भरोसा करें। अुन्हें अुनका पाकिस्तान मिल गया है। अब हिन्दुस्तानमें अुनका किसीसे कोअी झगड़ा नहीं है—कम-से-कम होना तो नहीं चाहिये। अगर आपके डर सच निकलें और मुसलमान आपके गुरुद्वारोंको भ्रष्ट करनेकी कोशिश करें, तो जहाँ तक मैं जानता हूँ वह अिस्लामके अुसूलोंके खिलाफ होगा। और, जो मुसलमान मन्दिरों और तीर्थस्थानोंको भ्रष्ट करनेमें हिस्सा लेंगे, वे अिस्लामको बरबाद करनेके भागीदार बनेंगे। आज हिन्दुस्तानके हर धर्मकी परीक्षा हो रही है। भगवान कभी न्याय करनेमें चूकता नहीं। अुसी भगवानकी पैदा की हुअी दुनिया मुस्लिम नेताओंके वचनों और गारण्टियोंसे अुनकी जाँच नहीं करेगी, बल्कि अुन नेताओं और अुनके साथियोंके कामोंसे अुनको परखेगी। जो बात मैंने मुस्लिम नेताओंके लिअे कही है, वही दूसरे धर्मोंके नेताओं और अुनके माननेवालोंके लिअे भी सच है।"

रावलपिण्डी ६-८-'४७
(अंग्रेजीसे)

सुशीला नय्यर

हलफ़नामेका मसविदा

श्री ब्रजलाल नेहरूने 'हरिजन'में छापनेके लिअे जो हलफ़नामेका मसविदा भेजा है, वह नीचे दिया जाता है—

"अिस हलफ़नामेपर हिन्दुस्तानकी फ़ौजी या गैर-फ़ौजी सरकारी नौकरियोंके सारे मेम्बरोंको, केन्द्रकी, सूबोंकी या लोकल (मुकामी) नौकरियोंके सारे अुम्मीदवारोंको, अिन सरकारोंके मातहत दूसरी बड़ी-बड़ी तनख्वाहोंवाली नौकरियोंके लिअे अर्जी करनेवालोंको, और धारासभाओंके मेम्बरोंके साथ-साथ विधान-सभाके मेम्बरोंको भी दस्तखत करने होंगे।

मैं अीमानदारीके साथ यह सौगन्ध लेता हूँ कि—

१. मैं हिन्दुस्तानी संघका नागरिक हूँ, जिसके प्रति हर हालतमें वफ़ादार रहनेका मैं वचन देता हूँ।

२. मैं अिस अुसूलको नहीं मानता कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग राष्ट्र हैं। मेरी यह राय है कि हिन्दुस्तानके सब लोग—फिर वे किसी भी जाति या धर्मके हों—अेक ही राष्ट्रके अंग हैं।

३. मैं अपने सारे कामों और भाषणोंमें अैसी कोशिश करूँगा, जिससे अिस पुराने और पवित्र देशके सब लोगोंकी अेक राष्ट्रीयताके विचारको शक्ति मिले।

४. अगर किसी समय मैं अिस प्रतिज्ञाको तोड़नेका गुनहगार साबित होअूँ, तो मुझे अुस समयकी अपनी किसी भी बड़ी तनख्वाहकी नौकरी या ओहदेसे हटा दिया जाय।"

अिस हलफ़नामेके शब्दोंमें सुधारकी गुंजाअिश हो सकती है। लेकिन अगर हम सियासी मैदानमें बढ़नेवाले रोगसे मुक्त होना चाहते हैं, तो अिस मसविदेके भीतर रही भावना सचमुच तारीफ़के लायक और अपनाने जैसी है।

पटना जाते हुअे ट्रेनमें, ७-८-'४७
(अंग्रेजीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

शान्ति और सम्पत्ति

न्यूयार्ककी डायोसिसन कान्फरेन्समें हिज़ ग्रेस दी आर्च बिशप (बड़े धर्माधिकारी) ने कहा बताते हैं कि "अगर दुनियामें शान्ति बनाये रखना है, तो ब्रिटेनको सशस्त्र रहना ही चाहिये।" अुन्होंने अपनी दलीलका यह कहकर समर्थन किया कि "बहुत बड़ी सम्पत्तिवाला अेक निहत्था देश दूसरे मुल्कोंको अपनेपर हमला करनेका बढ़ावा देता है। अिसके सिवा दुनियाकी समस्याओंपर फ़ैसले देनेमें अैसे निहत्थे देशका कुछ भी असर नहीं रहता।"

शान्तिके राजकुमार अीसा मसीहने हमें सिखाया है कि अपने पास रहनेवाली बेशुमार सम्पत्तिमें हमारी सच्ची ज़िन्दगी नहीं है, मगर जब हम अपने दुश्मनोंके साथ भला बरताव करेंगे और सारी दुनियाका राज मिलनेपर भी अपनी आत्माको नहीं खोअेंगे, तभी कहा जा सकता है कि हम सच्ची ज़िन्दगी बिता रहे हैं। जब शैतानने अीशुको दुनियाके राजका लालच दिया तो अुन्होंने अुसे झिड़ककर यह कहते हुअे भगा दिया कि "अे शैतान, मेरे सामनेसे भाग जा। अिन्सानको अपने मालिक, ख़ुदाकी ही अिबादत करनी चाहिये और अुसीकी सेवा करनी चाहिये।"

आज अेक चर्चके प्रधान पादरी अिससे ठीक अुलटी बातका अुपदेश दे रहे हैं। अुनका कहना है कि ब्रिटेनके पास ज़बर्दस्त सम्पत्ति है और अुसे राष्ट्रोंकी कौंसिलमें अपना असर रखना ही चाहिये। अिसके लिअे अुसे सशस्त्र फ़ौज रखनेकी ज़रूरत है, जो अुसके लालचकी पूर्तिके रास्तेमें आनेवालोंको ख़त्म कर दे। क्या यही शान्तिका रास्ता है? अीसा मसीहने बहुत बड़ी सम्पत्तिवाले अेक नौजवान राजाको सलाह दी थी कि वह अपनी सारी सम्पत्ति बेंच दे और अुसे ग़रीबोंमें बाँट दे। क्या वे आज ग्रेट ब्रिटेनको यह सलाह देंगे कि वह अिस सारी ग़ैर-ज़रूरी सम्पत्तिके बोझसे अपनेको हलका कर ले और अुसे अुन करोड़ों ग़रीबोंको लौटा दे, जो ज़िन्दगीकी बुनियादी ज़रूरतोंके अभावमें मुरझा रहे हैं।

अिसके साथ ही यह ख़बर मिली है कि ब्रिटेनके चांसलर ऑफ् अेक्सचेकर डॉ० ह्यू डाल्टनने पार्लामेंटमें अंग्रेज सरकारका यह स्पष्ट फ़ैसला सुना दिया है कि अिंग्लैंड, मिस्रको युद्धकर्ज़ चुकाना अपना अिख़लाक़ी फ़र्ज़ नहीं समझता। क्या अिख़लाक़ी फ़र्ज़ निबाहना न निबाहना भी सहूलियतकी बात है?

दुनियाकी शान्ति अन्याय या ताक़तके ज़रिये हासिल नहीं की जा सकती। जान पड़ता है कि अुन सारी ज़बरदस्त मुसीबतोंको देखकर भी, जो पिछले दो विश्व-युद्धोंमें दुनियाभरके अिन्सानोंको अुठानी पड़ी हैं, दुनियाके नेता अभी अिस सत्यको समझ नहीं पाये हैं। क्या अिन सारे कड़वे अनुभवोंके बाद भी हम यह सबक़ कभी न सीख सकेंगे?

(अंग्रेजीसे) जे० सी० कुमारप्पा

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी

लेखक : गांधीजी

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके बारेमें गांधीजीके आज तकके सारे विचारोंका संग्रह अिस किताबमें किया गया है। जल्दी ही यह किताब हिन्दुस्तानी भाषामें प्रकाशित हो रही है।

कीमत — डेढ़ रुपया डाकखर्च — ५ आना

व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय
पोस्ट बॉक्स १०५, अहमदाबाद

www.vinoba.in

नये संकल्पका अवसर

[श्री महादेव देसाअी समाज-सेवा महाविद्यालयके विद्यार्थी हस्तलिखित 'समाज-सेवक'का स्वराज-अंक निकालने जा रहे हैं। अुसके लिअे सरदार वल्लभभाअी पटेलने जो संदेश भेजा है, वह नीचे दिया जाता है]

'स्वराज-अंक'के पाठकोंको अिस आज़ादी-दिवसपर मैं अपने दिलकी शुभ कामनायें भेजता हूँ।

आज जब हम अपनी ज़िन्दगीकी आशा-अभिलाषाअें अपनी आँखोंके सामने पूरी होती देख रहे हैं, और आज़ादीकी लड़ाअीमें मिली हुअी जीतमें हिस्सा लेनेका हमें सौभाग्य मिला है, तब अिस शुभ घड़ीमें हमारा पहला फ़र्ज़ यह है कि आज़ादीकी बेदीपर जिन देशभक्तोंने अपनी ज़िन्दगीकी आहुति दी है, अुन्हें श्रद्धाञ्जलि दें। मुझे अुम्मीद है कि आज़ादीके अिस आनन्दोत्सवमें पूरा देश अुनकी याद किये बिना न रहेगा।

भगवानकी कृपा है कि अपने गौरव, अिज़्ज़त और शोहरतका यह महान अवसर देखनेका हमें सौभाग्य मिला है। महात्मा गांधीकी प्रेरक रहनुमाअीमें अपनी लम्बी, शान्तिभरी और अहिंसक लड़ाअीके महान अन्तपर अुत्सव मनाने और अुसके मक़सद तक अुसे पहुँचानेका हमें जो सौभाग्य मिला है, अुसके लिअे हमें अभिमान है। अितना तो हमें क़बूल करना ही होगा कि जो मक़सद हमने अपने सामने रखा था, अुसे हम अभी तक हासिल नहीं कर सके। फिर भी बिना किसी हिचकिचाहटके यह कहा जा सकता है कि हम अपने देशका जैसा भविष्य बनाना चाहते हैं, वैसा बनानेमें हमें अब कोअी रोक नहीं सकता।

अिस महान अुपनिवेशमें रहनेवाले हरअेक मर्द औरत और बच्चेके साथ हम अिस अपूर्व अवसरपर ख़ुशियाँ मना सकते हैं, यह हमारी ख़ुशकिस्मती है।

मगर आज़ादीके साथ ही साथ हमपर जो महान फ़र्ज़ और जिम्मेदारियाँ आ पड़ी हैं, ख़ुशीके आवेशमें कहीं हम अुनको न भूल जायँ। हमारा सबसे पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपनी ज़ानपर खेल कर भी अिस महँगे दामों मिली हुअी आज़ादीकी, देशकी भीतरी और बाहरी प्रगति-विरोधी ताक़तोंसे रक्षा करें। अिसके बाद हमें देखना होगा कि बड़े-से-बड़े और छोटे-से-छोटे हरअेक हिन्दुस्तानीको बराबरीका दरजा मिले और मज़दूरोंको पैदावारका वाज़िब हिस्सा मिले। हमें यह भी देखना होगा कि देहातके लाखों मज़दूरोंको अुनकी मेहनतका वाज़िब बदला मिले और साथ ही साथ यह भी देखना होगा कि देशकी सरकार देशके लोगोंको भरपेट खाना, पहनने-ओढ़नेके काफ़ी कपड़े, रहनेके अच्छे मकान और ज़रूरी शिक्षा देनेके अपने बुनियादी फ़र्ज़ोंको पूरी तरह अदा करे। भगवानकी दयासे हमें अपने बरसोंके आदर्शों और अिच्छाओंके मुताबिक देशका भविष्य बनानेका बड़ा अुम्दा मौका मिला है। अगर हमने अिस मौकेको हाथसे जाने दिया, तो अिसमें ग़लती दूसरोंकी नहीं, हमारी ही होगी। बेशक, हमारे रास्तेमें अपार कठिनाअियाँ और लगभग जीती न जा सकनेवाली रुकावटें हैं, लेकिन अिन सबपर विजय पाना हमारा ही काम है। अिस बड़े भारी काममें देशके हर आदमीकी मदद और हमदर्दीकी ज़रूरत है। अिस पवित्र फ़र्ज़को अदा करनेमें स्वार्थभरे झगड़ों, भीतर-भीतरके मतभेदों और तरफदारीके लिअे बिलकुल जगह नहीं है। यह जिम्मेदारी अितनी गंभीर है कि विरोधी ताक़तों या बाग़ी हलचलोंका अुसपर बुरा असर नहीं पड़ना चाहिये। हमारे प्यारे वतनको लगे हुअे बहुतसे घावोंको पूरना अभी बाकी है। बहुतसे सताये हुअे दुखी भाअी-बहनोंको दिलासा और शान्ति देना अभी बाकी है। अिस परोपकारके और राष्ट्रीय काममें मदद देने और हमदर्दी दिखानेमें कोअी ज़रा भी आनाकानी न करे। अिसके लिअे सबको अपनी शक्तिभर कोशिश करनी चाहिये।

अिस वक़्त स्वभावसे ही हम अुनके बारेमें सोचते हैं, जो अभी तक हमारे थे और हमारे साथ थे, लेकिन देशके टुकड़े होनेसे अब हमसे जुदा हो गये हैं। जिन्होंने अेकताके सपने देखे थे, और आज जिन्हें देशके टुकड़े देखने पड़ रहे हैं, अुनके अपार दुःख-दर्दको बहुत कम लोग समझ सकेंगे। लेकिन सरहदके अुस पारके प्यारे स्वजनोंको यह न समझना चाहिये कि हम अुन्हें भूल गये हैं या वे हमारे ख़यालसे बाहर हैं। अुनके हितोंका हम हमेशा ध्यान रखेंगे और अुनके भविष्यमें हम लगातर दिलचस्पी लेते रहेंगे। हमें पूरी आशा और विश्वास है कि थोड़े ही समयमें हम सब फिर अेक हो जायँगे।

आजके अिस शुभ दिनमें हम सबको अैसी भावनाओंके साथ देश-सेवाका नया संकल्प करना चाहिये।

(गुजरातीसे)

हरिजनसेवक

१७ अगस्त १९४७

विद्यार्थियोंकी मुश्किलें

"आजकल विद्यार्थियोंके तमाम मौजूदा संघोंको अेक राष्ट्रीय परिषदका रूप देने, विद्यार्थियोंके आन्दोलनकी बुनियादको फिरसे बदलने और विद्यार्थियोंके अेक संयुक्त राष्ट्रीय संघको जन्म देनेकी कोशिश हो रही है। आपकी रायमें अिस नये संघका क्या मक़सद होना चाहिये? आज देशमें जो नअी हालतें पैदा हो गअी हैं, अुनमें अिस विद्यार्थी-संघको कौनसे काम करने चाहियें?"

अिसमें कोअी शक नहीं कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरे विद्यार्थियोंका अेक राष्ट्रीय संघ होना चाहिये। विद्यार्थी, राष्ट्रके भविष्यको बनानेवाले होते हैं। अुनका बँटवारा नहीं किया जा सकता। मुझे यह कहते दुःख होता है कि न तो विद्यार्थियोंने ख़ुद अपने लिअे कभी यह सोचा और न नेताओंने अुन्हें सिर्फ़ अभ्यासमें ही मन लगानेका मौक़ा दिया, ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें। यह सड़ाँध विदेशी हुकूमतके साथ हमारे देशमें शुरू हुअी। अुस हुकूमतके वारिस बननेवाले हम लोगोंने भी बीते जमानेकी ग़लतियोंको सुधारनेकी तकलीफ नहीं की। अिसके अलावा, अलग अलग सियासी पार्टियोंने विद्यार्थियोंको अपने जालमें फँसानेकी कोशिश की, मानो वे मछलियोंके झुण्ड हों। और विद्यार्थी नादानीसे अिस फैलाये हुअे जालमें फँस गये।

अिसलिअे किसी भी विद्यार्थी-संघके लिअे यह काम हाथमें लेना बड़ा कठिन है। लेकिन अुनमें अैसे बहादुर लोग जरूर होंगे जो अिस जिम्मेदारीसे पीछे नहीं हटेंगे। अुनका मकसद होगा, सब विद्यार्थियोंको अेक संस्थाके मातहत संगठित करना। यह काम वे तब तक नहीं कर सकेंगे, जब तक वे सक्रिय राजनीतिसे बिलकुल अलग रहना नहीं सीखेंगे। विद्यार्थीको चाहिये कि वह अैसे कअी सवालोंका अध्ययन करे, जिनका हल किया जाना ज़रूरी हो। अुसके काम करनेका वक़्त पढ़ाअी ख़तम करनेके बाद ही आता है।

"आज विद्यार्थियोंके संघ राष्ट्र-निर्माणके काममें अपनी शक्ति लगानेके बनिस्बत सियासी मामलोंपर ठहराव पास करनेकी तरफ़ ज्यादा ध्यान देते हैं। अिसका अेक कारण यह है कि देशकी सियासी पार्टियाँ अपना मतलब निकालनेके लिअे विद्यार्थियोंकी संस्थाओंको हथियानेकी कोशिश करती रही हैं। हमारी आजकी फूट भी अिस सियासी दलबन्दीके कारण ही है। अिसलिअे हम कोअी अैसा तरीक़ा काममें लाना चाहते हैं जिससे विद्यार्थियोंके नये राष्ट्रीय संघमें दलबन्दी और फूटके विचार फिर न फैल सकें। क्या आप यह सोचते हैं कि विद्यार्थियोंके संघ राजनीतिसे बिलकुल अलग रह सकते हैं? अगर नहीं, तो आपकी रायमें विद्यार्थी-संघोंको देशकी राजनीतिमें किस हद तक दिलचस्पी लेनी चाहिये?"

कुछ हद तक अिस सवालका जवाब अूपर दिया जा चुका है। विद्यार्थियोंको सक्रिय राजनीतिसे बिलकुल अलग रहना चाहिये। यह देशके अेक तरफ़ा विकासकी निशानी है कि तमाम पार्टियोंने अपना मतलब पूरा करनेके लिअे ही विद्यार्थियोंका अुपयोग किया है। शायद अैसी हालतमें यह लाज़िमी भी था, जब कि शिक्षाका अेकमात्र मक़सद ग़ुलामीसे चिपटे रहनेवाले ग़ुलामोंकी अेक जाति पैदा करना था। मुझे अुम्मीद है कि यह काम अब ख़तम हो गया। आज विद्यार्थियोंका पहला काम अुस शिक्षापर पूरी तरह विचार करना है, जो आज़ाद राष्ट्रके बच्चोंको दी जानी चाहिये। आजकी शिक्षा तो हरगिज अैसी नहीं है। मेरे लिअे यहाँ अिस सवालपर विचार करना ज़रूरी नहीं कि वह कैसी होनी चाहिये। मैं तो सिर्फ़ यही कहना चाहता हूँ कि विद्यार्थी अपने-आपको अिस धोखेमें न रखें कि तालीमके सवाल पर हर पहलूसे सोचना और अुसकी योजना बनाना सिर्फ़ युनिवर्सिटी सीनेट (युनिवर्सिटीका अिन्तजाम करनेवालोंकी सभा)के मेम्बरोंका ही काम है। अुन्हें अपने अन्दर सोचने-विचारनेकी शक्ति बढ़ानी चाहिये। यहाँ मैं अिस बातकी सलाह तो दे ही नहीं सकता कि विद्यार्थी हड़तालों या दूसरी अिसी तरहकी हलचलोंके दबावसे यह हालत पैदा कर सकते हैं। अुन्हें तालीमके मौजूदा ढंगकी रचनात्मक और जाग्रत टीका करके जन-मत तैयार करना चाहिये। सीनेटके मेम्बर पुराने ढंगसे पले-पुसे हैं और शिक्षित हुअे हैं। अिसलिअे वे अिस दिशामें जल्दी जल्दी आगे नहीं बढ़ सकते। लेकिन यह सच है कि जाग्रति पैदा करके अुनसे यह काम कराया जा सकता है।

"आज ज़्यादातर विद्यार्थी राष्ट्रीय-सेवामें दिलचस्पी नहीं लेते। अुनमेंसे बहुतसे तो पश्चिमकी फैशनेबल आदतोंके ग़ुलाम बन रहे हैं और ज़्यादा-ज़्यादा तादादमें शराब पीने वग़ैराकी बुरी आदतोंके शिकार हो रहे हैं। आज़ादीसे किसी विषयपर सोचनेकी न तो अुनमें क़ाबलीयत है, न अिच्छा। हम अिन सारी समस्याओंको हल करना चाहते हैं और नौजवानोंमें अुच्च चरित्र, निज़ाम और क़ाबलीयत पैदा करना चाहते हैं।"

अिसमें विद्यार्थियोंकी मौजूदा अस्थिर मनोवृत्तिका वर्णन है। जब शान्त वातारण पैदा होगा और विद्यार्थी, आन्दोलन करना छोड़कर गम्भीरतासे अपनी पढ़ाअीमें जुट जायँगे, तब अुनकी यह हालत नहीं रहेगी। विद्यार्थीकी ज़िन्दगीकी जो सन्यासीकी ज़िन्दगीसे तुलना की गअी है, वह ठीक है। अुसे सादा रहन-सहन और अूँचे विचारकी जीती-जागती मूर्ति होना चाहिये। अुसे निज़ाम या अनुशासनका अवतार होना चाहिये। विद्यार्थीका आनंद अुसकी पढ़ाअीमें है। जब विद्यार्थी अपनी पढ़ाअीको लाज़मी टैक्सके रूपमें देखना छोड़ देता है, तब वह ज़रूर अुसको सच्चा आनंद देती है। विद्यार्थीके लगातार ज़्यादा-ज़्यादा ज्ञान हासिल करते जानेसे बढ़कर अुसके लिअे दूसरा आनंद और क्या हो सकता है?

पटना जाते हुअे ट्रेनमें, ७-८-'४७

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

ज़िन्दा दफ़नाया ?

अेक हैदराबादी भाअी लिखते हैं:—

"गांधीको ज़िन्दा दफ़नाया जा रहा है।

गांधीके माने गांधीके अुसूल। अिन्हीं अुसूलोंसे हम अिस दरजेपर पहुँचे हैं। लेकिन जिस सीढ़ीसे हम अूपर अुठे, अुसीको तोड़ताड़कर फेंक दिया जा रहा है। यह काम वे लोग कर रहे हैं, जो गांधीके सबसे बड़े अनुयायी भी कहलाते हैं। हिन्दू-मुस्लिम अेकता, हिन्दुस्तानी, खद्दर, ग्रामोद्योग — ये सब खतम कर दिये गये हैं। फिर भी जो अिनकी बातें करते हैं, वे या तो धोखेमें हैं, या जान-बूझकर धोखा दे रहे हैं।"

मुझे ज़िन्दा दफनानेका यह तरीका सबसे अच्छा है। 'दफनाया गया' अैसे तो मैं कैसे कबूल करूँ? मेरे सबसे बड़े अनुयायी कौन, और सबसे छोटे कौन? मेरा तो अेक ही अनुयायी है — वह मैं या सब हिन्दी। मेरे अनुयायी वे ही हैं, जो अूपरकी बातें मानते हैं। मेरी अुम्मीद तो अब भी रहती है कि करोड़ों देहाती ये चारों चीज़ें मानते हैं। फिर भी अिस अिलजाम (आरोप)में काफ़ी सत्य है। लेकिन अब मैं देख रहा हूँ कि मुस्लिम लीगी भाअी यह कहने लगे हैं कि हम सब भाअी-भाअी हैं। अब तो यह भी तय हो गया है कि हम सब दोनों हिस्सोंके शहरी हैं। पासपोर्टकी ज़रूरत आज तो नहीं मानी जायगी। कोअी अेक हुकूमत शुरू करे, तब ही अैसा हो सकता है। हम आशा रखें और अैसा बरताव करें जिससे पासपोर्टकी ज़रूरत ही न रहे। यह भी आशा रखें कि दोनोंमें से कोअी भी खद्दर नहीं छोड़ेंगे; देहाती अुद्योग-धन्धोंको नुकसान नहीं पहुँचायेंगे। हिन्दुस्तानीके बारेमें मैं लिख चुका हूँ। अुसे कैसे छोड़ा जाय? मुसलमान, जिनकी मादरी जबान अुर्दू है, अुर्दू कैसे छोड़ें? अुन्हें अपनी अुर्दू आसान करनी होगी और हिन्दुओंको, जो अुर्दू नहीं जानते, अपनी हिन्दी आसान करनी होगी। तभी दोनों अेक-दूसरेको समझ सकेंगे। सबसे बड़ी बात तो लेखकने छोड़ ही दी है। हिन्दुओंको अस्पृश्यता और जात-पाँत छोड़कर शुद्ध बनना होगा। मुसलमानोंको हिन्दुओंकी नफ़रत छोड़कर साफ़ होना होगा।

श्रीनगर, ३-८-'४७ **मोहनदास करमचंद गांधी**

तिरंगा झंडा

जिन हैदराबादी भाअीने यह लिखा है कि 'गांधीको ज़िन्दा दफनाया जा रहा है' वे ही आगे चलकर झंडेके बारेमें लिखते हैं — "तिरंगा झंडा हमारे आन्दोलनका प्रतीक था। अुससे चरखा हटाकर सबसे बड़ा अपराध किया गया है। नये चक्रका या पुराने अशोकके चक्रका गांधीके चरखेसे कोअी सम्बन्ध नहीं है, बल्कि वे परस्पर-विरोधी हैं। गांधीका चरखा धर्मसे, मज़हबसे परे है, मगर नया चक्र हिन्दू धर्मका प्रतीक है। गांधीका चरखा "अहिंसक परिश्रम"का प्रतीक है, मगर नया चक्र "सुदर्शन चक्र" का प्रतीक है (अैसा मुन्शीजी अपने भाषणमें कहते हैं)। सुदर्शन चक्र हिंसाका प्रतीक है। अिस प्रकार नये झंडेसे हिन्दू धर्मके नामपर राष्ट्रकी हिंसा वृत्तिको अुत्तेजन मिलेगा। अुस दिशामें यह जानबूझकर प्रयत्न किया जा रहा है। यह पाकिस्तानको मिलानेका नहीं, बल्कि पाकिस्तानको पक्का करनेका तरीक़ा है।"

मुन्शीजीने जो कहा, अुसे मैंने पढ़ा नहीं है। अगर झंडेका वही अर्थ है, जो अूपर बताया गया है, तो राष्ट्रीय झंडा गया। अशोकका चक्र किसी भी हालतमें हिंसाका प्रतीक नहीं बन सकता। महाराज अशोक बौद्ध थे, अहिंसाके पुजारी थे। सुदर्शन चक्रका तो झंडेके चक्रके साथ ताल्लुक़ नहीं हो सकता। सुदर्शन चक्र मेरी दृष्टिसे अहिंसाकी निशानी है। लेकिन यह मेरी ही बात हुअी। साधारण रूपसे सुदर्शन चक्र हिंसाका साधन माना जाता है। अिसमें शक नहीं कि नये झंडेसे और अुसपर जो बहस हुअी है, अुससे यह कहा जा सकता है कि अगरचे चरखेका मूल्य गया नहीं है, फिर भी कम तो ज़रूर हुआ है। अशोक-चक्र और सूत कातनेका चरखा अेक हैं, या नहीं, यह तो आखिरकार लोगोंके आचारपर निर्भर रहेगा।

श्रीनगर, ३-८-'४७ **मोहनदास करमचंद गांधी**

www.vinoba.in

टिप्पणियाँ

ये प्रार्थनाअें क्यों शामिल की गअीं?

श्रीनगरमें मुझे लाला किशोरीलालके बँगलेमें ठहराया गया था। वहाँ मैं तीन दिनों तक रहा। अिस दरमियान मैंने लालाजीके कम्पाअुण्डमें प्रार्थना तो की, मगर कोअी भाषण नहीं दिया। दिल्ली छोड़नेके पहले मैंने यह अैलान कर दिया था कि काश्मीरमें मैं कोअी भाषण नहीं दूँगा। मगर प्रार्थनामें शामिल होनेवाले भाअियोंमेंसे कुछने मुझसे सवाल पूछे। अुनमेंसे अेक सवाल यह था —

"पिछली शामको मैं आपकी प्रार्थना-सभामें हाज़िर था, जिसमें आपने दूसरी जातियोंकी दो प्रार्थनाअें पढ़ी थीं। क्या आप बतलानेकी कृपा करेंगे कि अैसा करनेमें आपका क्या खयाल है? और मज़हब या धर्मसे आपका क्या मतलब है?"

जैसा कि मैं आजसे पहले भी बतला चुका हूँ — रैहाना तैयबजीकी सलाहसे कुछ बरस पहले कुरानकी आयतें मेरी प्रार्थनामें शामिलकी गअी थीं। अुन दिनों रैहाना बहन सेवाग्राम आश्रममें रहती थीं। दूसरी प्रार्थना, डॉ. गिल्डरकी प्रेरणासे पारसी प्रार्थनाओंमेंसे ली गअी है। आगाखान-महलमें नज़रबन्दकी हालतमें रहते हुअे मैंने जब अपना अुपवास तोड़ा, तब डॉक्टर साहबने पारसी धर्मकी प्रार्थनाअें पढ़ी थीं। मेरी रायमें अिनको शामिल कर लेनेसे प्रार्थनाका महत्व बढ़ा है। अब वह पहलेसे ज़्यादा लोगोंके दिलोंतक पहुँचती है। अिससे हिन्दूधर्मकी विशालता और सहिष्णुता ज़ाहिर होती है। सवाल पूछनेवाले भाअीको यह भी पूछना चाहिये था कि प्रार्थनाकी शुरूआत जापानी भाषामें गाअी जानेवाली बौद्ध प्रार्थनासे क्यों होती है? अिस बौद्ध प्रार्थनाके पीछे, अुसकी पाक़ीज़गीके अनुकूल ही अेक अितिहास है। जब अेक भले जापानी साधु सेवाग्राम आश्रममें ठहरे हुअे थे, तब रोज सबेरे अिस बौद्ध प्रार्थनासे सारा सेवाग्राम गूँजता था। ये जापानी सन्त अपने मौन और गौरवभरे स्वभावकी वजहसे सारे आश्रमवासियोंके प्यारे बन गये थे।

जम्मू, ५-८-'४७

हिन्दुस्तानी क्यों नहीं?

अुन भाअीका दूसरा सवाल यह था — "लॉर्ड माअुण्टबेटनको पहला गवर्नर जनरल क्यों चुना गया?" जहाँ तक मेरा खयाल है, सवाल पूछनेवाले भाअीने अिसके कारणका सही अन्दाज़ लगाया है। अिस ओहदेके लिअे अितना योग्य कोअी हिन्दुस्तानी नहीं था। हिन्दुस्तान-आज़ादी-बिलकी कल्पना करनेमें लॉर्ड माअुण्टबेटनका पूरा नहीं, तो कुछ हिस्सा ज़रूर था, अिसलिअे राष्ट्रके जहाज़को तूफ़ानमें से सुरक्षित निकाल ले जानेमें वे आरज़ी सरकारके मेम्बरोंको सबसे क़ाबिल आदमी जान पड़े। अिसमें अगर अेक तरफ़ अंग्रेजोंकी तारीफ़की बात है, तो दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तानके राजनीतिज्ञोंको भी अिसके लिअे अुतना ही श्रेय दिया जाना चाहिये, जिन्होंने यह बतला दिया कि तरफ़दारीसे अूपर अुठनेकी अुनमें योग्यता है। साथ ही अुन्होंने दिखला दिया कि अभी तक जो अुनके विरोधी रहे हैं, अुनपर भरोसा करनेकी बहादुरी अुनमें हैं।

अल्पसंख्यकोंका सवाल

अुनका तीसरा सवाल था — "आप अिस बातके लिअे राज़ी क्यों नहीं होते कि अल्पसंख्यक लोग अपने-अपने अुपनिवेशोंको छोड़ दें?"

अिस बातपर राज़ी होनेके लिअे मुझे किसीने नहीं कहा। मगर मुझे अैसी किसी भी हलचलका विरोध करना चाहिये। किसी भी अुपनिवेशके बहुसंख्यकोंपर अविश्वास करनेका कोअी कारण नहीं है। और अब तो हर हालतमें जब हिन्दुस्तानमें दो सार्वभौम राज बन गये हैं, तब अिनमेंसे हर राजको अपने यहाँ रहेनवाले दूसरे राजके अल्पसंख्यकोंके प्रति अुचित व्यवहारकी गारण्टी देनी होगी। मगर हम अुम्मीद करें कि अैसा मौक़ा कभी नहीं आयेगा। मैं भी मानता हूँ कि हरअेक हक़के साथ अेक फ़र्ज़ जुड़ा हुआ है। अैसा कोअी हक़ नहीं, जो ठीक तरहसे अदा किये हुअे फ़र्ज़से न निकलता हो।

१५ अगस्तको सियासत छोड़ दूँगा?

अुन भाअीका चौथा सवाल है—'क्या आप १५ अगस्तको हिन्दुस्तानके आज़ाद हो जानेपर देशकी राजनीतिमें भाग लेना छोड़ देंगे?'

पहली बात तो यह है कि हमें जो आज़ादी मिल रही है, वह राम-राजके नजदीक ले जानेवाली नहीं है। राम-राज तो पहलेकी तरह आज भी हमसे करोड़ों मील दूर है। और फिर करोड़ोंका जीवन ही हर हालतमें मेरी राजनीति है। अुसे छोड़नेकी हिम्मत मुझमें नहीं है। अुसे छोड़नेका मतलब होगा मेरे जीवनके काम और भगवानको माननेसे अिन्कार करना। यह बहुत संभव है कि १५ अगस्तके बाद मेरी राजनीति कोअी दूसरा रास्ता ले ले। लेकिन अिसका फैसला तो परिस्थितियाँ ही करेंगी।

आखिरमें अुन्होंने पूछा है—'आपने बिहारमें काफी काम किया है; लेकिन पंजाबको क्यों भुलाया?'

अिसके जवाबमें मैं अितना ही कह सकता हूँ कि मेरे पंजाब न जानेका यह मतलब न लगाया जाय कि मैंने अुस सूबेको भुला दिया है। फिर भी यह सवाल बिलकुल ठीक है और कअी बार मुझसे पूछा भी गया है। मैंने पूरी अीमानदारीसे अिसका यही जवाब दिया है कि न तो मुझे पंजाब जानेके लिअे अपनी अन्तरात्मासे कोअी प्रेरणा मिली और न मेरे सलाहकारोंने मुझे बढ़ावा दिया।

पटना जाते हुअे ट्रेनमें, ७-८-'४७

(अंग्रेजीसे) **मो० क० गांधी**

दूधकी मिठाअियाँ

अेक भाअी लिखते हैं—

> "आप जानते हैं कि हिन्दुस्तानमें दूधकी कितनी तंगी है। यहाँ जमशेदपुरमें लगभग २॥ लाखकी आबादी है। अगर हर आदमीको २॥ छटाक दूध भी दिया जाय, तो रोज १००० मन दूधकी खपत होगी। अुसके खिलाफ़ टिस्को डेरी रोज सिर्फ़ ३० मन दूध पैदा करती है और हम लोग दूसरा ३ मन। ग्वाले घर-घर जाकर कितना पानी मिला दूध बेचते होंगे, यह हम नहीं जानते। लेकिन अितना हम ज़रूर जानते हैं कि जब छोटे बच्चों, गर्भवाली औरतों और बीमारोंको दूध पीनेको नहीं मिलता, तब हलवाअी लोग रोजाना लगभग ५० मन दूधकी मिठाअियाँ तैयार करते हैं। क्या रसगुल्लों, पेड़ों और अैसी ही दूसरी मिठाअियोंको तरजीह देकर दूधके खुराकी अिस्तेमालको बन्द कर देना ठीक होगा?"

गांधीजीने कअी बार चिल्ला-चिल्लाकर अिस सवालपर अपनी राय जाहिर की है। आजके नाजुक समयमें अन्नका अेक दाना भी बरबाद करना गुनाह है। मिठाअियाँ खाना तो बरबादीसे भी बदतर है। वे खानेवालोंको नुकसान पहुँचाती हैं और दूसरोंको दूधकी ज़रूरी खुराकसे महरूम रखती हैं। यह देखना जनताका काम है कि मिठाअी खाना तुरत बन्द कर दिया जाय। जब तक बीमारों और बच्चोंके लिअे काफ़ी दूध नहीं मिलता, तब तक दूधसे बनी हुअी सारी मिठाअियोंपर रोक लगा दी जानी चाहिये। सारे समझदार लोगोंको, अपनी ज़िम्मेदारी समझकर दूधकी मिठाअियोंको न छूनेकी और दूसरोंको भी अिसके लिअे राज़ी करनेकी प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये। जनताकी राय सबसे कारगर क़ानून या पाबन्दी है। अगर जनता अिस नाजुक हालतको और बच्चों व बीमारोंको जरूरी खुराकसे महरूम रखनेवाली मिठाअी खानेकी बुराअीको समझ ले, तो वह अपनी गलतीको सुधार लेगी। जनताकी जाग्रत रायके बिना बनावटी कंट्रोलसे कोअी फायदा नहीं हो सकता।

रावलपिण्डी, ३१-७-'४७

(अंग्रेजीसे) **सुशीला नय्यर**

अेक दुनिया, अेक सवाल

तक़लीफ़ दुनियाको अजीब तरीक़ेसे मिला देती है और अुसे अेक-सी भावनाओंसे भर देती है। कोढ़ अिस सचाअीका सबूत है। तमाम दुनियामें कोढ़के मरीज़ोंकी अिन्सानी ज़रूरतोंका भी खयाल नहीं किया जाता और अिस बीमारीके लिअे अेक वहम और डर मौजूद रहता है। यह सोचनेकी बात है कि आजके तहज़ीबयाफ़्ता और तरक़्क़ीकी शेखी मारनेवाले लोग कोढ़को हज़ारों बरस पुराने लोगोंकी तरह क्यों समझें, जब कि अेक मामूली नाअी ही सर्जनका काम किया करता था? अिस हालतके लिअे बहुत हद तक लोगोंकी जहालत और तास्सुब ही ज़िम्मेदार हैं। लेकिन अिसकी अेक और खास वजह है—मनुष्यमें भाअीचारेकी कमी। कोढ़की अपील असलमें मनुष्यकी अन्तरात्मा या ज़मीरसे अपील है।

नीचे अुन मुल्कोंसे आये हुअे खतोंके हिस्से दिये जाते हैं, जहाँ कोढ़ अेक अहम सवाल बन गया है।

जोसेफाअिन ग्वेरेरो, जो खुद कोढ़की मरीज़ हैं, और नोबलि-चीज़के कोढ़के अस्पतालमें रहकर पूरे विश्वास, पूरी हिम्मत और पूरे देशप्रेमसे अपने कमज़ोर साथियोंकी हिम्मत बढ़ानेकी कोशिश करती हैं, रिज़ाल (फिलिपाअिन्स) से लिखती हैं:

"ग़रीब और हर तरह भुलाअी हुअी कोढ़ियोंकी बस्तियोंके भीतर रहनेवाले मरीज़ोंकी ज़िन्दगी दर्दभरी और अफ़सोसनाक है। अुनकी बहुत-सी ज़रूरतें हैं। मैं यह चाहती हूँ कि आप लोग यह बात जान लें कि मुझे भगवानके प्रेममें हर मुसीबत सहनेमें खुशी होती है। क्योंकि अुससे बड़ी दूसरी खुशी हो भी क्या सकती है? अगर मैं अैसा कहूँ कि मैं हमेशा हँसती हुअी तकलीफ़ें सह लेती हूँ, तो यह न तो अिन्सानियत होगी और न सच होगा। दिल हिला देनेवाली तनहाअी और बयान न की जा सकनेवाली खाहिशों और आरज़ुओंके मौक़ोंपर ही अिन्सानकी सच्ची परख होती है। लेकिन मैं महसूस करती हूँ कि भगवानको मेरे लिअे यही अजीब और राज़भरी ज़िन्दगी मंज़ूर है। जब तक वह मुझे अपने पास बुला नहीं लेता, तब तक मैं अिसका राज़ नहीं जान सकूँगी। अिसलिअे भगवानको कोअी भेंट चढ़ाये बिना मैं अुससे सिर्फ़ यही प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे अुसकी मरज़ी पूरी करनेके लिअे ज़रूरी ताक़त और श्रद्धा दे। लेकिन मेरे साथी अितनी आसानीसे बच्चोंकी तरह बहलाये नहीं जा सकते। मुझे डर है कि अुनमेंसे बहुतसे नाअुम्मीद, बेकार, लाचार, बुरी आदतोंवाले और नफ़रतसे भरे हुअे हैं। बाकीके बहुत ज्यादा बेपरवाह और निकम्मे हैं। मेरी यह बड़ी खाहिश है कि मैं अिन तमाम अिन्सानोंके दुखोंको दूर करूँ और अुनमें अेक बार फिर आशाका संचार करके अुनके जीवनको सुखी और अुज्ज्वल बनाअूँ।"

बस्तीके दुख-दर्द और कमियोंकी कहानी बयान करनेके बाद यह बहादुर महिला लिखती हैं—"यहाँ दवाअियाँ ज़रूरतके मुताबिक़ नहीं मिलतीं। कोअी लेबोरेटरी या प्रयोगशाला भी नहीं है। डाक्टरी मदद भी काफ़ी नहीं है। थोड़ेमें यों कहा जा सकता है कि यह अस्पताल ही नहीं है। यह अेक जेलखाना है और मरीज़ोंकी हालत कैदियोंसे बेहतर नहीं है। कहा जाता है कि सरकार ग़रीब है, हालाँकि दूसरे सब कामोंके लिअे अुसके पास रुपया निकल आता है। अैसा क्यों है? क्या अिसलिअे कि सारी दुनिया कोढ़ीको नफ़रतकी निगाहसे देखनेकी साजिश कर चुकी है? क्या अेक बारका कोढ़ी सदा कोढ़ी बना रहेगा? लेकिन शायद मेरा गुस्सा करना बेकार है। मेरा खयाल है कि कोढ़ीकी किस्मत ही अैसी है। क्या सचमुच वह अैसी ही है? या, क्या वह अैसी ही होनी चाहिये? मैं अिस बारेमें कुछ करना चाहती हूँ। सरकारका खयाल है कि कोढ़ी नफ़रतके क़ाबिल है, यानी अुसके लिअे कुछ करना बेकार है। अगर कोढ़ीने क़ानून अपने हाथमें लेना सीख लिया है, वह बाग़ी हो गया है, लालची हो गया है, और घिनौना भी बन गया है, तो क्या अिसका सारा दोष अुसपर ही थोप दिया जाना चाहिये? यहाँ रहकर मैं अिस नतीजेपर

www.vinoba.in

पहुँची हूँ कि शायद अिसका सारा दोष कोढ़ीपर ही नहीं थोपा जा सकता। हममेंसे बहुतसोंको घरवालोंने भी छोड़ दिया है। बाकीके लोगोंके कोअी सगे-सम्बन्धी ही नहीं है।"

अमेरिकाके वर्जिन द्वीपों (जज़ीरों) से बेरिल अे० क्लार्कने लिखा है—"यहाँ तो कोढ़को रोज़मर्राकी चीज़ समझा जाता है। कुछ ही लोगोंको कोढ़ियोंकी बस्तीमें रखा जाता है और अुनपर कोअी खास ध्यान नहीं दिया जाता। अिसी वजहसे यहाँ कोढ़ियोंके लिअे किये जानेवाले कामके बारेमें कुछ जानने लायक़ है ही नहीं।"

क्यूबासे लुअी अे० मोरेनो लिखते हैं—"यहाँ पिछले कुछ बरसोंसे ही कोढ़के सवालपर विचार किया जाने लगा है और सरकार भी अुस तरफ़ ध्यान दे रही है। द्वीप (जज़ीरे)के दूसरे शहरोंमें नये दवाखाने बनाने और बीचके हिस्सेमें बड़ी-बड़ी कोढ़-बस्तियाँ बसानेकी तजवीज़ें तैयार हैं। यह सब तो कांग्रेसके बजटमें अेक खास रक़म मंज़ूर करनेपर ही हो सकता है।"

जोसेफ अेल० हिस्लोप चेकेचेरे, ट्रिनिडाडसे लिखते हैं—"आम लोगोंका बेचारे कोढ़ियोंकी तरफ़ जो रवैया है, अुससे मुझे सख़्त नफ़रत है। अिस सिलसिलेमें मैं अेक नौजवानकी मिसाल देता हूँ, जिसके पीछे डाक्टर और क़ानून अिस तरह पड़ गये मानों अुसने कोअी जुर्म किया हो, और अुसे कोढ़-बस्ती भेज दिया गया। वह घबराया नहीं और बीमारीका अिलाज कराता रहा। तीन सालके बाद अुसको बस्तीसे मुक्ति मिली। छूटते वक़्त अुसे कोढ़के डाक्टरके दस्तखतवाला अेक सर्टिफिकेट दिया गया जिसमें लिखा था कि अिस आदमीसे समाजको कोअी खतरा नहीं है। वह रोज़गारकी तलाशमें निकला और अेक सरकारी रेलगाड़ीमें तेल डालनेवालेकी जगह नौकर हो गया। अुसने अपना काम अच्छी तरह किया और तरक़्क़ी पाकर वह फायरमेन हो गया। किसी आदमीने, जो यह जानता था कि वह कभी कोढ़ियोंकी बस्तीमें रह चुका है, अुसकी शिकायत जनरल मैनेजरसे की। मैनेजरने अुसे हमेशाके लिअे छुट्टी दे दी। अुसने हिम्मत न हारी और दूसरी नौकरी कर ली। यहाँ भी अुसका वही हाल हुआ। अुसने फिर कोशिश की और अेक थियेटरके मैनेजरका शोफर हो गया। यहाँ वह अपना काम अच्छी तरह करता रहा। लेकिन कुछ समय बाद किसीने मैनेजरसे शिकायत की कि वह कोढ़ियोंकी बस्तीमें रह चुका है। जब मैनेजरको यह मालूम हुआ, तो वह फ़ौरन अपनी मोटरसे कूद पड़ा और अुसने शोफरको चले जानेके लिअे कहा, और वहीं अुसकी तनख़ाह दे दी। जल्दीमें मैनेजर दो बीस-बीस डालरके नोट अुसकी तनख़ाहके साथ और दे गया। शोफरने बेअीमान न बननेकी ख़ाहिशसे ज़्यादा रक़म वापिस करनी चाही। लेकिन मैनेजरने यह कहते हुअे रुपया वापिस लेनेसे अिन्कार कर दिया कि वह कोढ़ी है। अुस २५ या २७ बरसके नौजवानसे अिस कलंकका दुःख बरदाश्त न हो सका और वह अपने कमरेमें फाँसी लगाकर मर गया।"

दक्खिन रोडेशिया (अफ्रीका) के अे० अेच० पाअिप, डॉ० बी० मोअिसर ओ० बी० अी० के अिस्तीफ़ेका ज़िक्र करते हुअे लिखते हैं—"अुन्होंने १७ साल तक अकेले डाक्टरी अफ़सरका काम करनेके बाद पिछली अप्रैलके बीचमें हमें छोड़ा। अिस अरसेमें अक्सर अुनको यूरोपियन नर्सों या मददगारोंके बग़ैर काम करना पड़ा। सिर्फ़ आखिरी सालमें ही अुनको अेक ट्रेण्ड नर्स और लोगोंकी देखभाल करनेवाली सिस्टरकी मदद मिली थी। स्टाफकी कमी और मदद, जगह और ज़रूरी सामानकी लगातार माँगपर ध्यान न दिये जानेकी वजहसे ही अुन्हें अिस्तीफ़ा देना पड़ा था।" "डॉ० मोअिसरका विश्वास था कि मरीज़का अिलाज अुसकी मरज़ीसे करना चाहिये और अुसे, जहाँ तक हो सके, आज़ादी देनी चाहिये। वह किसी तरहकी ज़बरदस्ती या दबावके खिलाफ़ थे। अुनका खयाल था कि ज़बरदस्तीसे हमेशा अिलाजका सच्चा मक़सद ही खत्म हो जाता है, क्योंकि अिस वजहसे मरीज़ अपनी बीमारी छिपाने लगते हैं। अुनका मत है कि ज़बरदस्तीने दुनियाके किसी भी हिस्सेसे कोढ़की बीमारीको जड़से दूर नहीं किया, न अुसे किसी तरह घटाया। अिसके खिलाफ़, अगर मरीज़ोंको अलग रखकर अुनकी मरज़ीसे अुनका अिलाज किया जाय, तो बहुतसे मरीज़ अिलाजके लिअे आयेंगे और आते भी हैं। डाक्टरने अपनी प्राक्टिसके वक़्तमें क़ानूनको बिलकुल अेक तरफ़ रख दिया था। मेडिकल डाअिरेक्टरने भी अुनको नौकर रखते वक़्त अुनकी अिस बातको मान लिया था। असलमें तो 'कोढ़को दबाने' के बारेमें अेक क़ानून अभी तक दक्खिनी रोडेशियाके क़ानूनी रजिस्टरमें मौजूद है, जो डाक्टरके वहाँ रहनेके वक़्तमें जारी रहा। लेकिन अिस मुल्क या दूसरे मुल्कोंके कअी दूसरे क़ानूनोंकी तरह अिस क़ानूनको भी 'नरमीके साथ' बरता जाता था, और कुछ खास मौक़ोंपर ही अुसका अिस्तेमाल किया जाता था। बदकिस्मतीसे डाक्टरके चले जानेके बाद यह तय किया गया है कि कोढ़ियोंको जबरन् अलग रखनेका अुसूल दक्खिनी रोडेशियामें जारी किया जाय। अब हालत यह है कि मरीज़ोंको, अगर वे बस्तीके रहनेवाले या शहरी हैं, यहाँ आकर रहनेके लिअे मज़बूर किया जाता है। अिस सिलसिलेमें, यहाँका रिवाज अब पड़ोसी यूनियनके रिवाजके मुताबिक़ हो गया है।

"फिर भी, यह बात तो माननी ही चाहिये कि अब भी यहाँका मामूली रहन-सहन प्रिटोरियाके नजदीककी वेस्टफोर्ड संस्थाके बनिस्बत ज़्यादा अच्छा है। थोड़ेसे यूरोपियन मरीज़ अब भी अपने बग़ीचेवाले अलग-अलग मकानों या झोंपड़ोंमें रहते हैं, जहाँ अुनकी सारी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं। प्रिटोरियाकी तरह यहाँके ६०० अफ्रीकन मरीज़ कटीले तारोंसे घिरे हुअे जेलखानों जैसे बाड़ोंमें अेक साथ ठूँसकर नहीं रखे जाते। अिसमें शक नहीं कि देशी मरीज़ोंके मकान काफ़ी पुराने हो चुके हैं और किसी कामके नहीं रह गये हैं। अुनकी जगह नये और आजकलके मकान बनानेकी ज़रूरत है। लेकिन यह तो मज़दूरों और सामानके मिलनेपर तन्दुरुस्ती-महकमे द्वारा हाथमें ली जानेवाली लम्बे वक़्तकी सुधार-नीतिका सवाल है। देशी मरीज़ोंके मौजूदा मकान ६ अहातों या गाँवोंमें बने हुअे हैं। झोंपड़े कच्ची अींटों और छप्परोंके हैं। कहनेके लिअे अिनमेंसे हरअेक झोंपड़ा दो मरीज़ोंके लिअे है। लेकिन असलमें जगहकी मौजूदा कमीसे अक्सर अेक झोंपड़ेमें चार-चार मरीज़ तक रहते हैं, और बाजमें तो पाँच भी हो जाते हैं।"

बाहरके मुल्कोंसे आये हुअे खतोंमें गन्धकसे तैयार की हुअी नअी दवाअियोंका भी ज़िक्र है। अुम्मीद की जाती है कि वे चूलमोगराके तेलसे ज़्यादा फ़ायदा पहुँचायेंगी। वे लोग अुत्साहके साथ लिखते हैं कि ये दवाअियाँ न अच्छे होनेवाले मरीज़ोंको भी फ़ायदा पहुँचा सकती हैं। अगर जहालत (अज्ञान) और डरको दूर न किया गया और कोढ़ियोंकी तरफ दिखाअी जानेवाली लापरवाहीको अिन्सानियतसे भरी अुम्दा देखभालमें न बदला गया, तो कोढ़ियोंकी मुसीबत किसी खास दवासे भी दूर न हो सकेगी। आजके अन्दाज़के मुताबिक़ दुनियाके कोढ़के मरीज़ोंमेंसे ५ फ़ी सदीसे भी कमको ज़रूरी देखभाल और अिलाज नसीब होता है। अगर आज ९५ फ़ी सदी कोढ़ियोंको चूलमोगराका तेल भी नहीं मिलता, तो नअी और क़ीमती दवाअियाँ, जो बड़ी सावधानीसे दी जानी चाहियें, अेक अरसे तक अमली तौरपर काममें लाअी जानेके बजाय किताबोंकी शोभा ही बढ़ायेंगी—खासकर हिन्दुस्तान जैसे देशमें जहाँ लाखों गूँगे देहातियोंको किसी तरहकी डाक्टरी मदद नहीं मिलती। अगर अच्छा अिलाज और दवाअियाँ ग़रीबोंको नहीं मिल सकतीं, तो अुनकी तारीफ़ करनेसे क्या फ़ायदा? जैसा कि अमेरिकाके 'लेप्रोसी फाअुण्डेशन'के सदर पैरी बर्जेसने कहा है: "अगर जहालतकी वजहसे कोढ़ी अच्छा होनेके बाद भी बाक़ी तमाम अुमर नफ़रतका शिकार बना रहे, तो अुसे अच्छा ही क्यों किया जाय?" दवावाले कोढ़की दवा तलाश करें; जन्तु-शास्त्री कोढ़ मिटानेवाली दवाअी तैयार करें; कोढ़की तीमारदारीके दायरेमें काम करनेवाले कोढ़के आसपासकी हालतको ग़ौरसे देखें; जनताकी भलाअीका काम करनेवाले अफ़सर कोढ़की बीमारीसे दबे हुअे लोगोंके दिलोंको खुश करें, अुनके शरीर और

www.vinoba.in

अुनकी आत्माके नुक़सानको पूरा करके अुनकी ज़िन्दगीको किसी-न-किसी तरह अुपयोगी बनावें। लेकिन सबसे ज़रूरी बात यह है कि अलग-अलग क्षेत्रोंमें काम करनेवाला हरअेक कार्यकर्त्ता कोढ़के बारेमें असली हक़ीक़तका प्रचार करे। यही सचाअी कोढ़के लाखों मरीज़ोंको पुरानी जहालत, डर और तास्सुबसे मुक्ति दिला सकती है। कोढ़ हमारे पुरखोंकी आवाज़में हम जैसे आजके सभ्य और जगे हुअे लोगोंको यह आदेश देता है कि पुराने ज़मानेसे चले आ रहे अिन ज़ुल्मोंको बन्द करो।

(अंग्रेजीसे) टी० अेन० जगदीशन्

सच्चा अिस्लाम

अेक मुसलमान भाअीने जो खत मेरे पास भेजा था, अुसमेंसे निजी ज़िक्रको छोड़कर बाकी मैं नीचे दे रहा हूँ:—

"अिस्लाम सारी दुनियाका धर्म है। अुसका महान सन्देश है सत्यके लिअे कोशिश करना और अुसे पहचानना। मौलाना जलालुद्दीन रूमीकी नीचे दी गअी कवितासे यह साफ़ मालूम होता है कि खलीफ़ा अली जैसे महात्माओंको भी सत्यको पानेके लिअे कितनी बड़ी कोशिश करनी पड़ती है:

१. पैगम्बर साहबने अलीसे कहा—'अै अली, तुम खुदाके शेर हो, सबसे बड़े बहादुर हो। फिर भी तुम अपनी शेर जैसी बहादुरी और ताक़तके भरोसे मत बैठो।

(लेकिन) तुम सत्यके पेड़के नीचे आसरा लो और जिसकी बुद्धि ज्ञानमय हो, अुस आदमीकी शरणमें जाओ।

रूढ़िवादी धर्मको माननेवाले पुराणपंथी आदमीके रास्ते चलकर तुम सत्यको नहीं पा सकोगे।

धरतीपर अुस पुरुषकी छाया काफ़के परबत जैसी है। अुसकी आत्मा अूँचे आसमानमें अुड़नेवाले गरुड़ जैसी है।

क़यामतके दिन तक मैं अुसका गुणगान किया करूँ, तो भी वह अधूरा ही रहेगा।

याद रखो, वह सत्य मनुष्यकी शकलमें छिपा हुआ है। और, अेक अल्ला ही अुस सत्यको जाननेवाला है।

२. तुम नाम और रूपको छोड़कर गुणोंको पहचाननेकी कोशिश करो, जिससे ये गुण तुम्हें दुनियाके सार तक ले जायँ।

अिस दुनियाके सम्प्रदायों या फ़िरक़ोंके भेद अुनके नामोंसे पैदा हुअे हैं। लेकिन जब ये सारे सम्प्रदाय दुनियाके सार तक पहुँचते हैं, तभी अुनके माननेवाले खुदाकी शान्ति पाते हैं।

आज मुस्लिम हिन्दुस्तानके बारेमें सबसे बड़े दुःखकी बात यह है कि वह नामोंके जालमें फँस गया है। अुसने अिस्लामकी सच्ची सीखको भुला दिया है। अिस सीखको मानकर ही वह सत्यको पहचान सकता था।

हिन्दुस्तानके रहनेवाले अिस्लामके अनुयायी अपनी-अपनी मरजीके मुताबिक़ काम करते हैं और फिर भी यह कहते हैं कि हम अिस्लामके आदेशके माफ़िक़ काम करते हैं। लेकिन अुन्हें अिस बातका ध्यान नहीं रहता कि:

चाँद अपनी चाँदनी फैलाकर दुनियाको ठंडक देता है और कुत्ते अुसके सामने भूँकते हैं।

हर प्राणी अपने स्वभावके मुताबिक़ काम करता है, और हर प्राणी और हर चीज़को खुदाके हुक्मसे अुसके लायक़ काम मिला हुआ है।

सनातन समयकी सौगन्ध खाकर मैं कहता हूँ कि जो अच्छे कामोंमें विश्वास रखते हैं और अुन्हें करते हैं, और जो सत्य व अहिंसाका प्रचार करते हैं, अुनके सिवा दूसरे सारे आदमी अपना सब कुछ खो देते हैं।

अिसलिअे मैं आपसे बिनती करता हूँ कि जब आप मुसलमानोंके कामोंकी चर्चा करें, तब मेहरबानी करके अिस्लामका ज़िक्र न कीजिये, क्योंकि आज ये दोनों अेक-दूसरेसे बहुत दूर हो गये हैं।"

काश, यह अिस्लाम पाकिस्तानके कामोंमें दिखाअी दे और अिस खत लिखनेवाले भाअीका अुलाहना ग़लत साबित किया जा सके!

नअी दिल्ली, २०-७-'४७

(अंग्रेजीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

घुड़दौड़की बुरी आदत

नीचे दिया हुआ मज़मून 'हरिजनबंधु'में छपे अेक गुजराती खतका सारांश है—

"बरसातके मौसममें पूनामें घुड़दौड़ होती है। तीन स्पेशल गाड़ियाँ हर रोज़ पूना जाती हैं और वापिस आती हैं। और यह तब होता है, जब गाड़ियोंमें जगह नहीं मिलती और व्यापारियोंको मुसाफिरोंसे ठसाठस भरी हुअी गाड़ियोंमें सफ़र करना पड़ता है। मुसाफिर अक्सर पायदानोंपर खड़े-खड़े सफ़र करते देखे जाते हैं। नतीजा यह होता है कि कभी-कभी प्राण-घातक अकस्मात हो जाते हैं। अिसमें यह सत्य और जोड़ दीजिये कि जब पेट्रोलकी सब जगह कमी है, तब अेक्स्ट्रा मोटर गाड़ियाँ भी बम्बअीसे पूना दौड़ती हैं। क्या ये मुसाफिर बम्बअीमें अपना हमेशाका राशन नहीं लेते? क्या अिनको स्पेशल गाड़ियोंमें और घुड़दौड़के मैदानमें नाश्ता नहीं मिलता?

अिस परसे मेरे मनमें सिविल सर्विसकी जाँच करनेकी बात पैदा होती है। जिन लोगोंके बुरे अिन्तज़ामकी हम पहले निन्दा किया करते थे, क्या वे ही लोग आज देशका राजकाज नहीं चला रहे हैं? हमारी आज क्या हालत हो रही है? हमें ज़रूरत का अनाज और कपड़ा भी मयस्सर नहीं होता। और हम अपनेको खर्चीले खेल-तमाशोंमें फँसा हुआ पाते हैं।"

मैं अक्सर घुड़दौड़की बुराअियोंके बारेमें लिख चुका हूँ। मगर अुस वक़्त मेरी बातपर कोअी ध्यान नहीं देता था। विदेशी शासक अिस बुरी आदतको पसंद करते थे और अुन्होंने अिसे अेक क़िस्मकी अच्छाअीका जामा पहना दिया था। मगर अब अुस गन्दी आदतसे चिपके रहनेकी कोअी वजह नहीं है। या कहीं यह तो न हो कि हम विदेशी हुकूमतकी बुराअियोंको तो बनाये रखें और अुसकी अच्छाअियाँ अुसके साथ ही खत्म हो जायँ?

खत लिखनेवाले भाअी सिविल सर्विसके बारेमें जो कहते हैं, अुसमें बहुत सचाअी है। वह अेक अैसी संस्था है, जिसके आत्मा नहीं है। वह अपने मालिकके ढंगपर चलती है। अिसलिअे अगर हमारे नुमाअिन्दे सचेत रहें, और हम अुनपर अपना फ़र्ज़ अदा करनेके लिअे ज़ोर दें, तो सिविल सर्विसके ज़रिये बहुत कुछ काम किया जा सकता है। आलोचना किसी भी जमहूरी सरकारका भोजन है। मगर वह रचनात्मक और समझदारीभरी होनी चाहिये। जन-आन्दोलनकी शुरुआतमें कांग्रेस अपनी जिस बुनियादी पाक़ीज़गीके लिअे मशहूर थी, अुसपर ही जनताकी आशा टिकी हुअी है। और अगर हमें ज़िन्दा रहना है, तो कांग्रेसमें वह पाक़ीज़गी फिरसे लौटानी होगी।

पटना जाते हुअे ट्रेनमें, ७-८-'४७

(अंग्रेजीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

		पृष्ठ
हफ़्तेवार डायरी	... सुशीला नय्यर	२३३
हलफ़नामेका मसविदा	... गांधीजी	२३४
शान्ति और सम्पत्ति	... जे० सी० कुमारप्पा	२३५
नये संकल्पका अवसर	... वल्लभभाअी पटेल	२३५
विद्यार्थियोंकी मुश्किलें	... गांधीजी	२३६
ज़िन्दा दफ़नाया?	... गांधीजी	२३७
तिरंगा झंडा	... गांधीजी	२३७
अेक दुनिया, अेक सवाल	... टी० अेन० जगदीशन्	२३८
सच्चा अिस्लाम	... गांधीजी	२४०
घुड़दौड़की बुरी आदत	... गांधीजी	२४०
टिप्पणियाँ—		
ये प्रार्थनाअें क्यों शामिल की गअीं?	... गांधीजी	२३७
हिन्दुस्तानी क्यों नहीं?	... गांधीजी	२३७
अल्पसंख्यकोंका सवाल	... गांधीजी	२३७
१५ अगस्तके बाद सियासत छोड़ दूँगा?	... गांधीजी	२३८
दूधकी मिठाअियाँ	... सुशीला नय्यर	२३८

www.vinoba.in